पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका: विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका

वर्ष: 2; संख्या:2; 2021; पृष्ठ संख्या: 80

प्रतियोगिता

✍ डॉ. जीन एस. ड्खार

जीवन की पाठशाला में कई लोग आये-गये,
कोई नाम लेकर यहाँ से गया,
कोई बदनाम होकर चला गया।
ईमानदार व्यक्ति करता है घोर परिश्रम,
उसी परिश्रम के बल पर वह पुण्य का धन कमाता गया।
बेईमान व्यक्ति रचता है घोर षड्यंत्र,
उसी षड्यंत्र के चलते वह पाप का धन जुटाता गया।
होड़ लगी हुई है प्रतियोगिता की,
इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं सभी।
कोई नैतिकता की पूँजी से आगे बढ़ा
तो कोई अनैतिकता के दाव-पेंच से सफल हुआ।
सम्मान पाने की ललक सभी में है
वही सम्मान पाने हेतु वह नींव गढ़ता है।
सत्पुरुष का कर्म ही उसके गुणों का बखान करता है,
और दुष्ट अपना ही मुँह मिया मिट्ठू बना फिरता है।
लोकप्रिय वे दोनों ही होते हैं
पर उस लोकप्रियता में अंतर केवल इतना ही है –
कि एक को तो तजुर्बे ने जीवन जीना सिखाया
तो दूसरे को प्रतियोगिता की जिद ने बस हराना सिखाया।

संपर्क-सूत्र:
सहायक प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग, लेडी कीन कॉलेज, शिलॉग